



Ankit son

01 Jan 2026

11:33 AM

Gauhati

Model: Web-MyKundli

Order No: 121254701

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 01/01/2026
दिन _____: गुरुवार
जन्म समय _____: 11:33:00 घंटे
इष्ट _____: 13:15:51 घटी
स्थान _____: Gauhati
राज्य _____: Assam
देश _____: India

अक्षांश _____: 26:10:00 उत्तर
रेखांश _____: 91:45:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: 00:37:00 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 12:10:00 घंटे
वेलान्तर _____: -00:03:27 घंटे
साम्पातिक काल _____: 18:53:38 घंटे
सूर्योदय _____: 06:14:39 घंटे
सूर्यास्त _____: 16:42:33 घंटे
दिनमान _____: 10:27:54 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: शिशिर
सूर्य के अंश _____: 16:36:14 धनु
लग्न के अंश _____: 24:10:56 मीन

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: मीन - गुरु
राशि-स्वामी _____: वृष - शुक्र
नक्षत्र-चरण _____: रोहिणी - 2
नक्षत्र स्वामी _____: चन्द्र
योग _____: शुभ
करण _____: कौलव
गण _____: मनुष्य
योनि _____: सर्प
नाड़ी _____: अन्त्य
वर्ण _____: वैश्य
वश्य _____: चतुष्पाद
वर्ग _____: मृग
युँजा _____: पूर्व
हंसक _____: भूमि
जन्म नामाक्षर _____: वा-वासुदेव
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: ताम्र - स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: मकर

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

| कैलेंडर | वर्ष | मास | तिथि/प्रविष्टे |
|------------|---------------|----------|----------------|
| राष्ट्रीय | शक : 1947 | पौष | 11 |
| पंजाबी | संवत : 2082 | पौष | 18 |
| बंगाली | सन् : 1432 | पौष | 16 |
| तमिल | संवत : 2082 | मार्गड़ी | 17 |
| केरल | कोल्लम : 1201 | धनु | 17 |
| नेपाली | संवत : 2082 | पौष | 17 |
| चैत्रादि | संवत : 2082 | पौष | शुक्ल 13 |
| कार्तिकादि | संवत : 2082 | पौष | शुक्ल 13 |

पंचांग

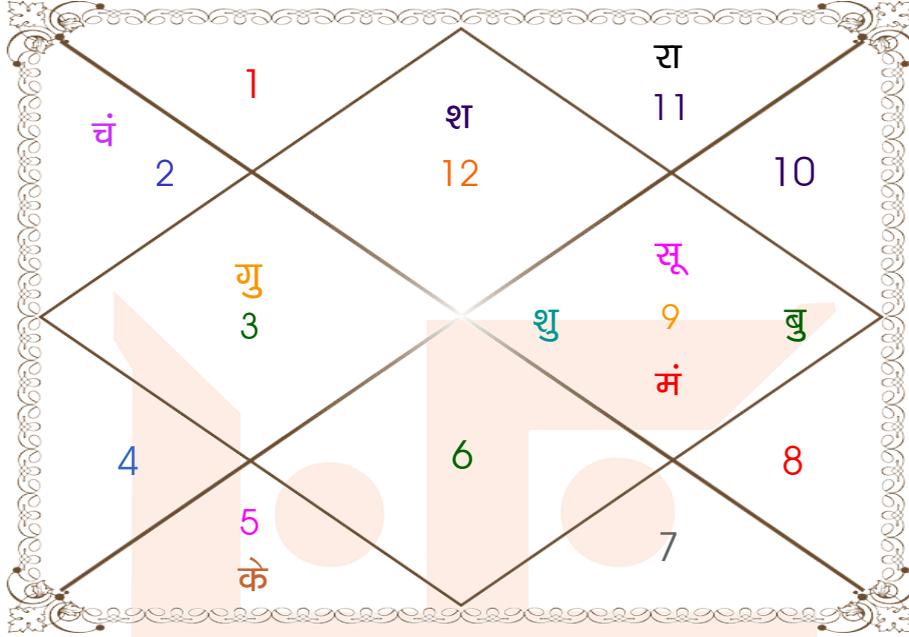
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 13
तिथि समाप्ति काल _____ : 22:22:26
जन्म तिथि _____ : 13
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : रोहिणी
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 22:48:16 घंटे
जन्म योग _____ : रोहिणी
सूर्योदय कालीन योग _____ : शुभ
योग समाप्ति काल _____ : 17:12:23 घंटे
जन्म योग _____ : शुभ
सूर्योदय कालीन करण _____ : कौलव
करण समाप्ति काल _____ : 12:06:20 घंटे
जन्म करण _____ : कौलव
भयात _____ : 25:07:50
भभोग _____ : 53:15:59
भोग्य दशा काल _____ : चंद्र 5 वर्ष 3 मा 14 दि

घात चक्र

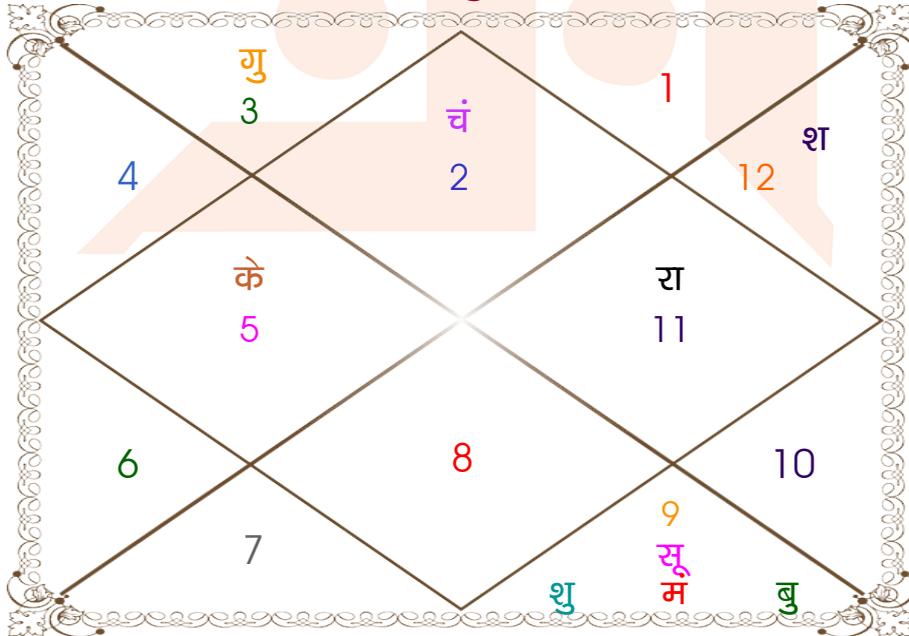
मास _____ : मार्गशीर्ष
तिथि _____ : 5-10-15
दिन _____ : शनिवार
नक्षत्र _____ : हस्त
योग _____ : शुक्ल
करण _____ : शकुनि
प्रहर _____ : 4
वर्ग _____ : सिंह
लग्न _____ : वृष
सूर्य _____ : वृश्चिक
चन्द्र _____ : कन्या
मंगल _____ : धनु
बुध _____ : कन्या
गुरु _____ : मकर
शुक्र _____ : मकर
शनि _____ : तुला
राहु _____ : मकर

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

| | | |
|----------|----|----|
| श ल | चं | गु |
| रा | | के |
| सू मं | | |

लग्न कुंडली

| | |
|----|----------|
| चं | श ल |
| गु | रा |
| के | सू मं |

विंशोत्तरी
चन्द्र 5वर्ष 3मा 14दि
चन्द्र
01/01/2026
18/04/2141

| | |
|--------|------------|
| चन्द्र | 17/04/2031 |
| मंगल | 17/04/2038 |
| राहु | 17/04/2056 |
| गुरु | 17/04/2072 |
| शनि | 17/04/2091 |
| बुध | 18/04/2108 |
| केतु | 18/04/2115 |
| शुक्र | 18/04/2135 |
| सूर्य | 18/04/2141 |

योगिनी
सिद्धा 3वर्ष 8मा 13दि
सिद्धा
01/01/2026
15/09/2029

| | |
|---------|------------|
| | 00/00/0000 |
| | 00/00/0000 |
| | 01/01/2026 |
| पिंगला | 16/03/2026 |
| धान्या | 15/10/2026 |
| भामरी | 26/07/2027 |
| भद्रिका | 15/07/2028 |
| उल्का | 15/09/2029 |

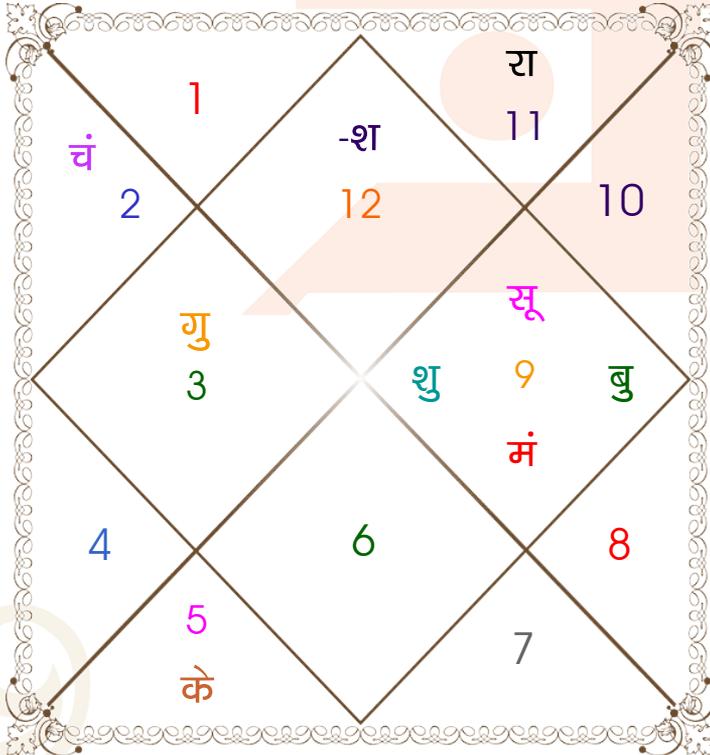
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

| ग्रह | व | अ | राशि | अंश | गति | नक्षत्र | पद | नं. | रा | न | अं. | स्थिति |
|---------|---|---|------|----------|-----------|----------------|----|-----|-------|-------|-------|------------|
| लग्न | | | मीन | 24:10:56 | 486:13:01 | रेवती | 3 | 27 | गुरु | बुध | राहु | --- |
| सूर्य | | | धनु | 16:36:14 | 01:01:08 | पूर्वाषाढ़ा | 1 | 20 | गुरु | शुक्र | चंद्र | मित्र राशि |
| चंद्र | | | वृष | 16:16:47 | 15:01:16 | रोहिणी | 2 | 4 | शुक्र | चंद्र | शनि | मूलत्रिकोण |
| मंगल | अ | | धनु | 18:39:35 | 00:45:59 | पूर्वाषाढ़ा | 2 | 20 | गुरु | शुक्र | राहु | मित्र राशि |
| बुध | | | धनु | 04:48:53 | 01:31:37 | मूल | 2 | 19 | गुरु | केतु | मंगल | सम राशि |
| गुरु | व | | मिथु | 27:06:10 | 00:07:51 | पुनर्वसु | 3 | 7 | बुध | गुरु | शुक्र | शत्रु राशि |
| शुक्र | अ | | धनु | 15:18:08 | 01:15:30 | पूर्वाषाढ़ा | 1 | 20 | गुरु | शुक्र | शुक्र | सम राशि |
| शनि | | | मीन | 01:57:37 | 00:03:31 | पूर्वाभाद्रपद | 4 | 25 | गुरु | गुरु | राहु | सम राशि |
| राहु | व | | कुंभ | 16:41:42 | 00:08:51 | शतभिषा | 4 | 24 | शनि | राहु | शुक्र | मित्र राशि |
| केतु | व | | सिंह | 16:41:42 | 00:08:51 | पूर्वाफाल्गुनी | 2 | 11 | सूर्य | शुक्र | चंद्र | शत्रु राशि |
| हर्ष | व | | वृष | 03:43:14 | 00:01:38 | कृतिका | 3 | 3 | शुक्र | सूर्य | शनि | --- |
| नेप | | | मीन | 05:17:17 | 00:00:45 | उ०भाद्रपद | 1 | 26 | गुरु | शनि | शनि | --- |
| प्लूटो | | | मक | 08:30:16 | 00:01:48 | उत्तराषाढ़ा | 4 | 21 | शनि | सूर्य | शुक्र | --- |
| दशम भाव | | | धनु | 18:07:03 | -- | पूर्वाषाढ़ा | -- | 20 | गुरु | शुक्र | राहु | -- |

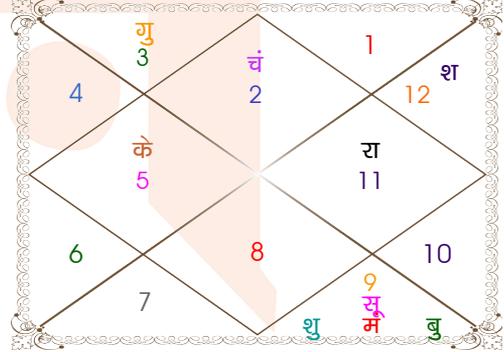
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:13:18

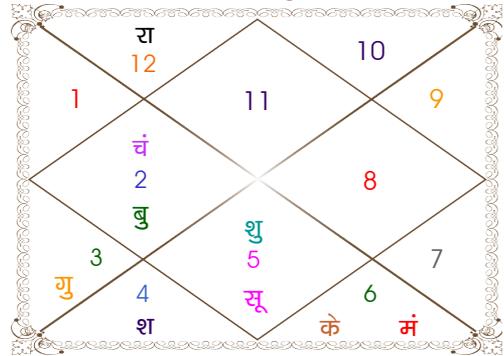
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

| भाव | भाव संधि | भाव मध्य |
|-----|------------------|------------------|
| 1 | मीन 08:10:18 | मीन 24:10:56 |
| 2 | मेष 08:10:18 | मेष 22:09:39 |
| 3 | वृष 06:09:00 | वृष 20:08:21 |
| 4 | मिथुन 04:07:42 | मिथुन 18:07:03 |
| 5 | कर्क 04:07:42 | कर्क 20:08:21 |
| 6 | सिंह 06:09:00 | सिंह 22:09:39 |
| 7 | कन्या 08:10:18 | कन्या 24:10:56 |
| 8 | तुला 08:10:18 | तुला 22:09:39 |
| 9 | वृश्चिक 06:09:00 | वृश्चिक 20:08:21 |
| 10 | धनु 04:07:42 | धनु 18:07:03 |
| 11 | मकर 04:07:42 | मकर 20:08:21 |
| 12 | कुम्भ 06:09:00 | कुम्भ 22:09:39 |

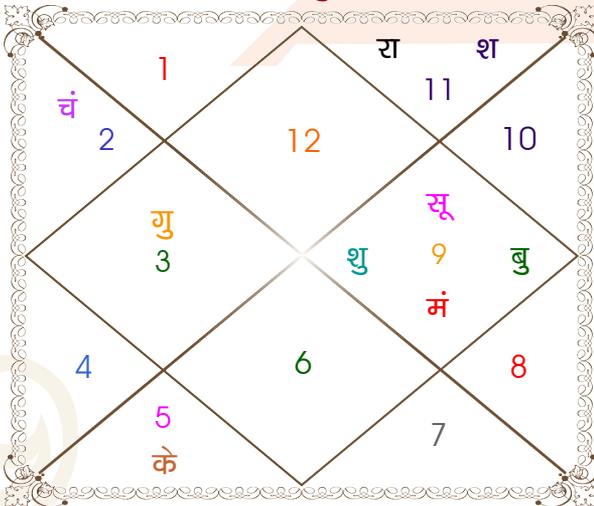
निरयण भाव चलित

| भाव | राशि | अंश |
|-----|---------|----------|
| 1 | मीन | 24:10:56 |
| 2 | मेष | 27:49:53 |
| 3 | वृष | 24:11:53 |
| 4 | मिथुन | 18:07:03 |
| 5 | कर्क | 13:39:29 |
| 6 | सिंह | 14:54:36 |
| 7 | कन्या | 24:10:56 |
| 8 | तुला | 27:49:53 |
| 9 | वृश्चिक | 24:11:53 |
| 10 | धनु | 18:07:03 |
| 11 | मकर | 13:39:29 |
| 12 | कुम्भ | 14:54:36 |

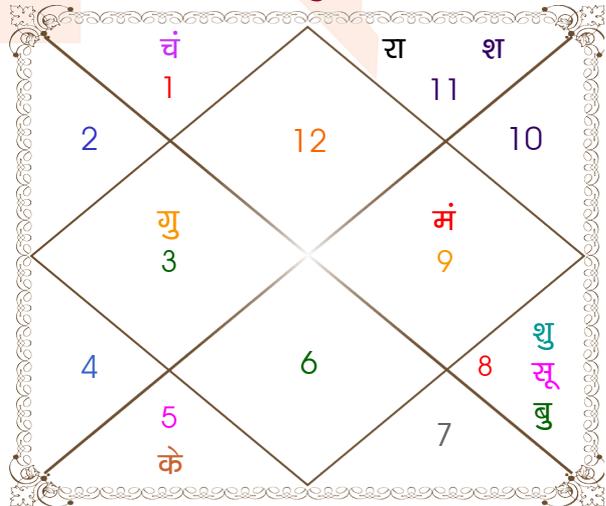
तारा चक्र

| जन्म | सम्पत | विपत | क्षेम | प्रत्यारि | साधक | वध | मित्र | अतिमित्र |
|--------|---------|---------|---------------|-----------|----------|---------|------------|------------|
| रोहिणी | मृगशिरा | आर्द्रा | पुनर्वसु | पुष्य | आश्लेषा | मघा | पूर्वाषाढा | उत्तराषाढा |
| हस्त | चित्रा | स्वाति | विशाखा | अनुराधा | ज्येष्ठा | मूल | पूर्वाषाढा | उत्तराषाढा |
| श्रवण | धनिष्ठा | शतभिषा | पूर्वाभाद्रपद | उ०भाद्रपद | रेवती | अश्विनी | भरणी | कृतिका |

चलित कुंडली



भाव कुंडली



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : चन्द्र 5 वर्ष 3 मास 14 दिन

| चंद्र 10 वर्ष | मंगल 7 वर्ष | राहु 18 वर्ष | गुरु 16 वर्ष | शनि 19 वर्ष |
|------------------|------------------|------------------|------------------|------------------|
| 01/01/2026 | 17/04/2031 | 17/04/2038 | 17/04/2056 | 17/04/2072 |
| 17/04/2031 | 17/04/2038 | 17/04/2056 | 17/04/2072 | 17/04/2091 |
| 00/00/0000 | मंगल 13/09/2031 | राहु 28/12/2040 | गुरु 05/06/2058 | शनि 20/04/2075 |
| 00/00/0000 | राहु 01/10/2032 | गुरु 24/05/2043 | शनि 16/12/2060 | बुध 28/12/2077 |
| 00/00/0000 | गुरु 07/09/2033 | शनि 30/03/2046 | बुध 24/03/2063 | केतु 06/02/2079 |
| 01/01/2026 | शनि 17/10/2034 | बुध 16/10/2048 | केतु 28/02/2064 | शुक्र 08/04/2082 |
| शनि 15/02/2027 | बुध 14/10/2035 | केतु 04/11/2049 | शुक्र 29/10/2066 | सूर्य 21/03/2083 |
| बुध 17/07/2028 | केतु 11/03/2036 | शुक्र 03/11/2052 | सूर्य 17/08/2067 | चंद्र 19/10/2084 |
| केतु 15/02/2029 | शुक्र 11/05/2037 | सूर्य 28/09/2053 | चंद्र 16/12/2068 | मंगल 28/11/2085 |
| शुक्र 17/10/2030 | सूर्य 16/09/2037 | चंद्र 30/03/2055 | मंगल 22/11/2069 | राहु 04/10/2088 |
| सूर्य 17/04/2031 | चंद्र 17/04/2038 | मंगल 17/04/2056 | राहु 17/04/2072 | गुरु 17/04/2091 |

| बुध 17 वर्ष | केतु 7 वर्ष | शुक्र 20 वर्ष | सूर्य 6 वर्ष | चंद्र 10 वर्ष |
|------------------|------------------|------------------|------------------|------------------|
| 17/04/2091 | 18/04/2108 | 18/04/2115 | 18/04/2135 | 18/04/2141 |
| 18/04/2108 | 18/04/2115 | 18/04/2135 | 18/04/2141 | 00/00/0000 |
| बुध 13/09/2093 | केतु 14/09/2108 | शुक्र 18/08/2118 | सूर्य 06/08/2135 | चंद्र 16/02/2142 |
| केतु 10/09/2094 | शुक्र 14/11/2109 | सूर्य 18/08/2119 | चंद्र 04/02/2136 | मंगल 17/09/2142 |
| शुक्र 11/07/2097 | सूर्य 22/03/2110 | चंद्र 18/04/2121 | मंगल 11/06/2136 | राहु 18/03/2144 |
| सूर्य 17/05/2098 | चंद्र 21/10/2110 | मंगल 18/06/2122 | राहु 06/05/2137 | गुरु 18/07/2145 |
| चंद्र 17/10/2099 | मंगल 19/03/2111 | राहु 18/06/2125 | गुरु 22/02/2138 | शनि 02/01/2146 |
| मंगल 14/10/2100 | राहु 05/04/2112 | गुरु 17/02/2128 | शनि 04/02/2139 | 00/00/0000 |
| राहु 03/05/2103 | गुरु 12/03/2113 | शनि 18/04/2131 | बुध 12/12/2139 | 00/00/0000 |
| गुरु 08/08/2105 | शनि 21/04/2114 | बुध 16/02/2134 | केतु 18/04/2140 | 00/00/0000 |
| शनि 18/04/2108 | बुध 18/04/2115 | केतु 18/04/2135 | शुक्र 18/04/2141 | 00/00/0000 |

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल चंद्र 5 वर्ष 3 मा 12 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

| चंद्र - शनि | चंद्र - बुध | चंद्र - केतु | चंद्र - शुक्र | चंद्र - सूर्य |
|------------------|------------------|------------------|------------------|------------------|
| 01/01/2026 | 15/02/2027 | 17/07/2028 | 15/02/2029 | 17/10/2030 |
| 15/02/2027 | 17/07/2028 | 15/02/2029 | 17/10/2030 | 17/04/2031 |
| 01/01/2026 | बुध 30/04/2027 | केतु 29/07/2028 | शुक्र 27/05/2029 | सूर्य 26/10/2030 |
| बुध 07/01/2026 | केतु 30/05/2027 | शुक्र 03/09/2028 | सूर्य 27/06/2029 | चंद्र 10/11/2030 |
| केतु 09/02/2026 | शुक्र 24/08/2027 | सूर्य 13/09/2028 | चंद्र 17/08/2029 | मंगल 21/11/2030 |
| शुक्र 17/05/2026 | सूर्य 19/09/2027 | चंद्र 01/10/2028 | मंगल 21/09/2029 | राहु 18/12/2030 |
| सूर्य 15/06/2026 | चंद्र 01/11/2027 | मंगल 14/10/2028 | राहु 21/12/2029 | गुरु 11/01/2031 |
| चंद्र 02/08/2026 | मंगल 01/12/2027 | राहु 15/11/2028 | गुरु 13/03/2030 | शनि 09/02/2031 |
| मंगल 05/09/2026 | राहु 17/02/2028 | गुरु 13/12/2028 | शनि 17/06/2030 | बुध 07/03/2031 |
| राहु 30/11/2026 | गुरु 26/04/2028 | शनि 16/01/2029 | बुध 11/09/2030 | केतु 18/03/2031 |
| गुरु 15/02/2027 | शनि 17/07/2028 | बुध 15/02/2029 | केतु 17/10/2030 | शुक्र 17/04/2031 |
| मंगल - मंगल | मंगल - राहु | मंगल - गुरु | मंगल - शनि | मंगल - बुध |
| 17/04/2031 | 13/09/2031 | 01/10/2032 | 07/09/2033 | 17/10/2034 |
| 13/09/2031 | 01/10/2032 | 07/09/2033 | 17/10/2034 | 14/10/2035 |
| मंगल 26/04/2031 | राहु 10/11/2031 | गुरु 15/11/2032 | शनि 10/11/2033 | बुध 07/12/2034 |
| राहु 18/05/2031 | गुरु 31/12/2031 | शनि 08/01/2033 | बुध 06/01/2034 | केतु 28/12/2034 |
| गुरु 07/06/2031 | शनि 01/03/2032 | बुध 26/02/2033 | केतु 30/01/2034 | शुक्र 26/02/2035 |
| शनि 01/07/2031 | बुध 24/04/2032 | केतु 18/03/2033 | शुक्र 07/04/2034 | सूर्य 17/03/2035 |
| बुध 22/07/2031 | केतु 16/05/2032 | शुक्र 13/05/2033 | सूर्य 28/04/2034 | चंद्र 16/04/2035 |
| केतु 31/07/2031 | शुक्र 19/07/2032 | सूर्य 30/05/2033 | चंद्र 31/05/2034 | मंगल 07/05/2035 |
| शुक्र 25/08/2031 | सूर्य 08/08/2032 | चंद्र 28/06/2033 | मंगल 24/06/2034 | राहु 30/06/2035 |
| सूर्य 01/09/2031 | चंद्र 09/09/2032 | मंगल 18/07/2033 | राहु 24/08/2034 | गुरु 17/08/2035 |
| चंद्र 13/09/2031 | मंगल 01/10/2032 | राहु 07/09/2033 | गुरु 17/10/2034 | शनि 14/10/2035 |
| मंगल - केतु | मंगल - शुक्र | मंगल - सूर्य | मंगल - चंद्र | राहु - राहु |
| 14/10/2035 | 11/03/2036 | 11/05/2037 | 16/09/2037 | 17/04/2038 |
| 11/03/2036 | 11/05/2037 | 16/09/2037 | 17/04/2038 | 28/12/2040 |
| केतु 23/10/2035 | शुक्र 21/05/2036 | सूर्य 18/05/2037 | चंद्र 04/10/2037 | राहु 12/09/2038 |
| शुक्र 16/11/2035 | सूर्य 11/06/2036 | चंद्र 28/05/2037 | मंगल 16/10/2037 | गुरु 21/01/2039 |
| सूर्य 24/11/2035 | चंद्र 17/07/2036 | मंगल 05/06/2037 | राहु 17/11/2037 | शनि 27/06/2039 |
| चंद्र 06/12/2035 | मंगल 11/08/2036 | राहु 24/06/2037 | गुरु 16/12/2037 | बुध 13/11/2039 |
| मंगल 15/12/2035 | राहु 14/10/2036 | गुरु 11/07/2037 | शनि 18/01/2038 | केतु 10/01/2040 |
| राहु 06/01/2036 | गुरु 09/12/2036 | शनि 31/07/2037 | बुध 17/02/2038 | शुक्र 22/06/2040 |
| गुरु 26/01/2036 | शनि 15/02/2037 | बुध 18/08/2037 | केतु 02/03/2038 | सूर्य 10/08/2040 |
| शनि 19/02/2036 | बुध 16/04/2037 | केतु 26/08/2037 | शुक्र 06/04/2038 | चंद्र 01/11/2040 |
| बुध 11/03/2036 | केतु 11/05/2037 | शुक्र 16/09/2037 | सूर्य 17/04/2038 | मंगल 28/12/2040 |

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

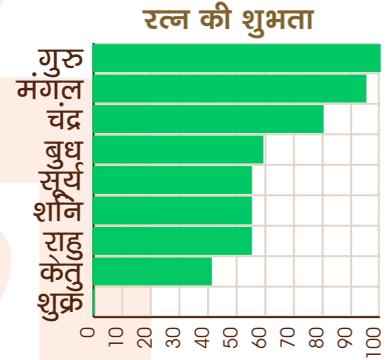
| | |
|--------------|--------------------------|
| मूलांक | 1 |
| भाग्यांक | 3 |
| मित्र अंक | 1, 4, 8, 9, 3 |
| शत्रु अंक | 5, 6 |
| शुभ वर्ष | 19,28,37,46,55 |
| शुभ दिन | सोम, मंगल, गुरु |
| शुभ ग्रह | चन्द्र, मंगल, गुरु |
| मित्र राशि | मकर, कुम्भ |
| मित्र लग्न | मिथुन, वृश्चिक, मकर |
| अनुकूल देवता | विष्णु |
| शुभ रत्न | पुखराज |
| शुभ उपरत्न | सुनहला, पीला हकीक |
| भाग्य रत्न | मूंगा |
| शुभ धातु | कांसा |
| शुभ रंग | पीत |
| शुभ दिशा | पूर्वोत्तर |
| शुभ समय | संध्या |
| दान पदार्थ | हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प |
| दान अन्न | दाल चना |
| दान द्रव्य | घी |

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

| रत्न | ग्रह | शुभता | क्षेत्र |
|----------|-------|-------|---|
| पुखराज | गुरु | 100% | सुख, व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य |
| मूंगा | मंगल | 95% | व्यावसायिक उन्नति, धन, भाग्योदय |
| मोती | चंद्र | 80% | पराक्रम, सन्तति सुख |
| पन्ना | बुध | 59% | व्यावसायिक उन्नति, सुख, दम्पति |
| माणिक्य | सूर्य | 55% | व्यावसायिक उन्नति, शत्रु व रोग मुक्ति |
| नीलम | शनि | 55% | स्वास्थ्य, धनार्जन, कम खर्च |
| गोमेद | राहु | 55% | कम खर्च, स्वास्थ्य |
| लहसुनिया | केतु | 41% | शत्रु व रोग, व्यावसायिक हानि |
| हीरा | शुक्र | 0% | व्यावसायिक हानि, पराक्रम हानि, दुर्घटना |



दशानुसार रत्न विचार

| दशा | समाप्ति | माणिक्य | मोती | मूंगा | पन्ना | पुखराज | हीरा | नीलम | गोमेद | लहसुनिया |
|-------|------------|---------|------|-------|-------|--------|------|------|-------|----------|
| चंद्र | 17/04/2031 | 61% | 93% | 95% | 66% | 100% | 0% | 55% | 34% | 16% |
| मंगल | 17/04/2038 | 61% | 86% | 100% | 44% | 100% | 0% | 55% | 34% | 52% |
| राहु | 17/04/2056 | 34% | 68% | 83% | 59% | 100% | 12% | 61% | 67% | 16% |
| गुरु | 17/04/2072 | 61% | 86% | 100% | 44% | 100% | 0% | 55% | 55% | 41% |
| शनि | 17/04/2091 | 34% | 68% | 83% | 66% | 100% | 12% | 67% | 61% | 16% |
| बुध | 18/04/2108 | 61% | 68% | 95% | 72% | 100% | 12% | 55% | 55% | 41% |
| केतु | 18/04/2115 | 34% | 68% | 100% | 59% | 100% | 12% | 34% | 34% | 58% |
| शुक्र | 18/04/2135 | 34% | 68% | 95% | 66% | 100% | 25% | 61% | 61% | 52% |
| सूर्य | 18/04/2141 | 67% | 86% | 100% | 59% | 100% | 0% | 34% | 34% | 16% |

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

| | | | |
|------------------------|-----------------------|-----------------------|-----------------------|
| साढ़ेसाती प्रथम ढैया | 03/06/2027-20/10/2027 | 23/02/2028-08/08/2029 | 05/10/2029-17/04/2030 |
| साढ़ेसाती द्वितीय ढैया | 08/08/2029-05/10/2029 | 17/04/2030-31/05/2032 | ----- |
| साढ़ेसाती तृतीय ढैया | 31/05/2032-13/07/2034 | ----- | ----- |
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया | 27/08/2036-22/10/2038 | 05/04/2039-13/07/2039 | ----- |
| अष्टम स्थानस्थ ढैया | 08/12/2046-06/03/2049 | 10/07/2049-04/12/2049 | ----- |

द्वितीय चक्र:

| | | | |
|------------------------|-----------------------|-----------------------|-----------------------|
| साढ़ेसाती प्रथम ढैया | 07/04/2057-27/05/2059 | ----- | ----- |
| साढ़ेसाती द्वितीय ढैया | 27/05/2059-11/07/2061 | 13/02/2062-07/03/2062 | ----- |
| साढ़ेसाती तृतीय ढैया | 11/07/2061-13/02/2062 | 07/03/2062-24/08/2063 | 06/02/2064-09/05/2064 |
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया | 13/10/2065-03/02/2066 | 03/07/2066-30/08/2068 | ----- |
| अष्टम स्थानस्थ ढैया | 16/01/2076-11/07/2076 | 11/10/2076-15/01/2079 | ----- |

तृतीय चक्र:

| | | | |
|------------------------|-----------------------|-----------------------|-----------------------|
| साढ़ेसाती प्रथम ढैया | 21/05/2086-21/05/2086 | 08/02/2087-18/07/2088 | 31/10/2088-05/04/2089 |
| साढ़ेसाती द्वितीय ढैया | 18/07/2088-31/10/2088 | 05/04/2089-19/09/2090 | 25/10/2090-21/05/2091 |
| साढ़ेसाती तृतीय ढैया | 19/09/2090-25/10/2090 | 21/05/2091-02/07/2093 | ----- |
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया | 18/08/2095-11/10/2097 | 02/05/2098-20/06/2098 | ----- |
| अष्टम स्थानस्थ ढैया | 29/11/2105-25/02/2108 | 29/07/2108-23/11/2108 | ----- |

शनि का ढैया फल

| ढैया के प्रकार | फल | क्षेत्र |
|------------------------|------|---------------|
| साढ़ेसाती प्रथम ढैया | अशुभ | धन |
| साढ़ेसाती द्वितीय ढैया | शुभ | पराक्रम |
| साढ़ेसाती तृतीय ढैया | सम | सुख |
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया | सम | शत्रु से कष्ट |
| अष्टम स्थानस्थ ढैया | शुभ | व्यावसाय |

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति चन्द्रमा से अष्टम भाव में है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं। चूंकि आपकी कुंडली में यह दोष भंग नहीं हो रहा है। अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। यदा कदा आप पित या गर्मी के द्वारा शारीरिक परेशानी की अनुभूति करेंगे। पत्नी का स्वास्थ्य भी मध्यम ही रहेगा तथा स्वभाव से यदा कदा वे उग्रता के भाव का भी प्रदर्शन कर सकती हैं। इससे परस्पर संबंधों में मतभेद उत्पन्न होंगे लेकिन इसका प्रभाव अल्पकालिक रहेगा तथा कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। आपको अपने सांसारिक महत्व के कार्यों को पूर्ण करने में अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। साथ ही विवाह में भी किंचित मात्रा में विलम्ब हो सकता है लेकिन अन्त में आपको सफलता अवश्य प्राप्त होगी। आपका दाम्पत्य जीवन शान्ति पूर्वक व्यतीत होगा। इसके अतिरिक्त चन्द्रमा से मंगल का दोष अल्प माना जाता है अतः सामान्यतया शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त होंगे।

आपकी चन्द्रकुंडली में मंगल की स्थिति अष्टम भाव में है अतः शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य सामान्यतया मध्यम ही रहेगा। शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में परिश्रम तथा पराक्रम से ही सफलता होगी। एकादश भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आपके आय स्रोतों में उन्नति होगी तथा प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में आप समर्थ रहेंगे। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि से पारिवारिक शान्ति मध्यम रहेगी। यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद भी उत्पन्न होंगे साथ ही वाणी में भी ओजस्विता का भाव विद्यमान रहेगा परन्तु धनऐश्वर्य की स्थिति उत्तम रहेगी। तृतीय भाव पर मंगल की स्थिति के प्रभाव से भाई बहनों का सुख एवं सहयोग सामान्य रहेगा परन्तु पराक्रम में वृद्धि होगी तथा मन में आत्मविश्वास का भाव बना रहेगा। आप अपने कार्य क्षेत्र में उन्नतिशील रहेंगे एवं मानसिक सन्तुष्टि भी बनी रहेगी।

अपने दाम्पत्य जीवन को सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको किसी ऐसी

मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिसकी कुंडली से आपका परस्पर मांगलिक दोष भंग हो सके। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक स्थानों अर्थात प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में शनि राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए इस प्रकार मांगलिक दोष भंग हो जाने पर आपके सुख एवं सौभाग्य में वृद्धि होगी तथा प्रचुर मात्रा में सांसारिक सुखों का उपभोग करते हुए आपका दाम्पत्य जीवन व्यतीत होगा तथा परस्पर संबंधों में भी मधुरता बनी रहेगी। एक दूसरे को अपना सहयोग प्रदान करने में आप तत्पर रहेंगे।



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है।
- नवम भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है।
- त्रिक भाव का स्वामी लग्न में स्थित है और उस पर शनि का प्रभाव है।

आपकी कुण्डली में चन्द्र और मंगल के कारण पितृदोष है।

आपकी कुण्डली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी “ॐ नमः शिवाय” का मंत्र जाप करें। दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें। ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें।

आपकी कुण्डली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांड़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

दशमभाव में सूर्य हो तो जातक-प्रतापी, व्यवसाय कुशल, राजमान्य लब्ध-प्रतिष्ठ, राजमन्त्री, उदार, ऐश्वर्य सम्पन्न एवं लोकमान्य होता है।

धनु राशि में रवि हो तो जातक विवेकी, योगमार्गगत, बुद्धिमान्, धनी, आस्तिक, व्यवहार कुशल, दयालु, शान्त, लोकप्रिय एवं शीघ्र क्रोधित होने वाला होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन के अधिकांश महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपकी उन्नति के लिए अपना पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही व्यापार तथा आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहयोग से आप सफलता अर्जित कर सकेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु वे शीघ्र ही समाप्त हो जाएंगे। इसके साथ ही आप जीवन में उनको आर्थिक तथा अन्य रूप से पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे तथा सुख दुःख में उनको पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करेंगे।

चन्द्र

तृतीय, भाव में चन्द्रमा हो तो जातक आस्तिक, तपस्वी, प्रसन्नचित्त, कफरोगी, मधुरभाषी प्रेमी, भाईयों और बहिनों का रक्षक, साहसी, विद्वान, एवं कंजूस होता है।

वृष राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सुन्दर प्रसन्नचित्तवाला, कामी, दान करने वाला, अधिक कन्या सन्तति वाला, शान्त, कफरोगी, सुखी, कुशा बुद्धिवाला, सुगठित शरीरवाला, धनी, सन्तोषी, चंचलमन, परलिंगी के प्रति आकर्षण, खाने-पीने का शौकीन एवं लोकप्रिय होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति तृतीय भाव में है। अतः माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आपके प्रति उनका पूर्ण अपनत्व तथा स्नेह का भाव रहेगा एवं जीवन में सर्वप्रकार से आपकी सहायता करने के लिए वे नित्य तत्पर रहेंगी। साथ ही शक्ति, साहस एवं पराक्रम में आपकी वृद्धि में वे सदैव सहायक रहेंगी। इसके अतिरिक्त वे आपको समय समय पर अच्छा भोजन खिलाने के लिए भी तत्पर रहेंगी।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान तथा श्रद्धा का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा पालन के लिए प्रायः तत्पर रहेंगे। साथ ही यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु इससे आपके मधुर संबंधों में कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में उनकी पूर्ण सेवा तथा आर्थिक सहायता तथा अन्य प्रकार का सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार असुविधा नहीं होने देंगे। इसके लिए आप सर्वदा प्रयत्नशील

रहेंगे।

मंगल

दसवें भाव में मंगल हो तो जातक कुलदीपक, स्वाभिमानी, सन्तति कष्टवाला, धनवान्, सुखी, उत्तम-वाहनों से सुखी एवं यशस्वी होता है।

धनु राशि में मंगल हो तो जातक चतुर राजनैतिक नेता, कम सन्तान, लोकप्रिय प्रसिद्ध, उच्चप्रशासकीय पद प्राप्त करने वाला, कठोर, शठ, कूर, परिश्रमी एवं पराधीन होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति दशम भाव में है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी महसूस करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह विद्यमान रहेगा। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी उनसे वांछित सहयोग आपको प्राप्त होता रहेगा। तथा नौकरी या यपार संबंध कार्यों में भी वे आपको सहयोग प्रदान करगै।

आपके हृदय में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा तथा आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी परन्तु कई बार मतभेदों के कारण संबंधों में तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु यह अल्प समय तक रहेगा। इसके साथ ही आप आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हें सहयोग प्रदान करते रहेंगे एवं सुख दुःख में भी एक दूसरे का सहायता करते रहेंगे।

बुध

दशमभाव में बुध हो तो जातक सत्यवादी, मनस्वी, व्यवहार कुशल, लोकमान्य, विद्वान, लेखक, कवि जमींदार, मातृ-पितृ भक्त, राजमान्य, न्यायी एवं भाग्यवान् होता है।

धनु राशि में बुध हो तो जातक विद्वान्, समाज में सम्मानित, गुणी, सुगठित शरीर, अविवेकी, अच्छा संगठनकर्ता, चतुर, ईमानदार, उदार, प्रसिद्ध, राजमान्य, लेखक, सम्पादक एवं वक्ता होता है।

गुरु

चतुर्थभाव में गुरु हो तो जातक शौकीन मिजाज, सुन्दरदेही, आरामतलब, परिश्रमी, ज्योतिषी, उच्चशिक्षा प्राप्त, कमसन्तान, सरकार द्वारा सम्मानित, माँ से स्नेह करने वाला, कार्यरत, उद्योगी, लोकमान्य, यशस्वी एवं व्यवहारज्ञ होता है।

मिथुन राशि में गुरु हो तो जातक योग्य वक्ता, सुगठित शरीर, लम्बाकद, उदार, विद्वान, कई भाषाओं का जानने वाला, अनायास धनप्राप्त करने वाला, लोकमान्य, लेखक एवं व्यवहार कुशल होता है।

शुक्र

दशम भाव में शुक्र हो तो जातक गुणवान्, दायालु, विलासी, ऐश्वर्यवान्, भाग्यवान्, न्यायवान् विजयी, गानप्रिय, धार्मिक ज्योतिषी एवं लोभी होता है।

धनु राशि में शुक्र हो तो जातक धनी, बलशाली, स्वोपार्जित द्रव्य द्वारा पुण्य करने वाला, विद्वान्, सुन्दर, लोकमान्य, राज्यमान्य, सुखी घरेलू जीवन, उच्चपद की प्राप्ति एवं प्रभावशाली होता है।

शनि

लग्न (प्रथम) में शनि मकर, कुम्भ तथा तुला का हो तो धनाढ्य, सुखी, धनु और मीन राशियों में हो तो अत्यन्त धनवान् और सम्मानित एवं अन्य राशियों का हो तो अशुभ होता है।

मीन राशि में शनि हो तो जातक अविचारी, शिल्पकार हतोत्साही, धनी, प्रसिद्ध, सुखी एवं दूसरों की सहायता करने वाला होता है।

राहु

बारहवें भाव में राहु हो तो जातक विवेकहीन, कामी, चिन्ताशील, अतिव्ययी, सेवक, परिश्रमी, मूर्ख एवं मतिमन्द होता है।

कुम्भ राशि में राहु हो तो जातक विद्वान्, लेखक मितभाषी एवं मितव्ययी होता है।

केतु

षष्ठभाव में केतु हो तो जातक वात विकारी, झगड़ालू, अरिष्टनिवारक, सुखी, मितव्ययी, भूत प्रेतजनित रोगों से रोगी, दुर्घटना, दीर्घायु एवं धनी होता है।

सिंह राशि में केतु हो तो जातक बहुभाषी, डरपोक, असहिष्णु, सर्पदशन का भय एवं असन्तोषी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- चन्द्र
(01/01/2026 - 17/04/2031)

चन्द्र महादशा की अवधि दस वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह दशा 01/01/2026 को आरम्भ होगी और 17/04/2031 को समाप्त होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में चंद्र तृतीय भाव में अवस्थित है जो मानसिक प्रवृत्ति, बुद्धि अध्ययन के प्रति झुकाव, साहस, आपके भाई-बहनों, अफवाहों, गले, हँसली, बाँहों और स्नायु तंत्र का प्रतिनिधित्व करता है।

दस वर्षों की इस अवधि में आपको शांति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी और ईश्वर में आपकी निष्ठा होगी।

स्वास्थ्य :

इस अवधि में आपको सुख और उत्तम जीवन की प्राप्ति होगी। आप स्फूर्ति का अनुभव करेंगे और अपने कर्तव्यों का पालन उत्तम ढंग से करेंगे। किसी बड़े रोग या दुर्घटना की सम्भावना नहीं है।

अर्थ और सम्पत्ति :

तृतीय भाव का स्वामी होने के कारण चन्द्र इस बात के संकेत देता है कि आपकी धर्म-कर्म में प्रवृत्ति होगी जिससे आपका जीवन सुखमय, अनुकूल तथा सुव्यवस्थित होगा। इस अवधि में आप बहुत अधिक धनोपार्जन करेंगे और अपनी सम्पत्ति और बैंक बैलेंस में वृद्धि करेंगे। अगर व्यवसायी हैं तो नया व्यवसाय आरम्भ करेंगे और अगर सेवारत हैं तो आर्थिक स्थिति में सुधार के लिए नये मार्गों की खोज में रहेंगे जिसके लिए आप यात्राओं पर भी जा सकते हैं।

व्यवसाय :

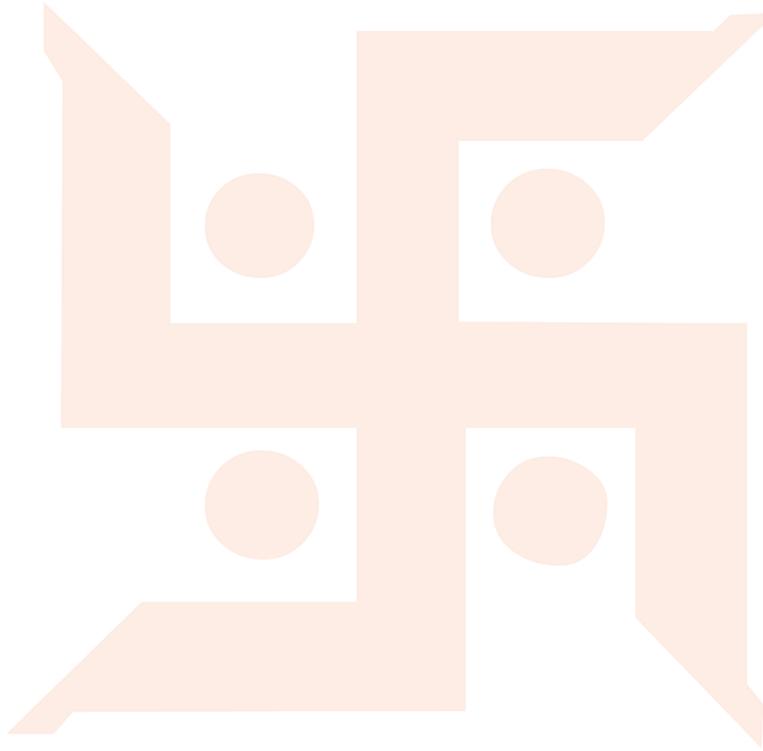
आप अपनी व्यावसायिक स्थिति में सुधार के लिए यात्राओं पर जा सकते हैं क्योंकि आप सक्रिय, यात्रा-प्रिय तथा बहादुर हैं। व्यवसाय में सुधार के लिए किसी कार्य का अवसर भी प्राप्त हो सकता है। आपके मस्तिष्क में नये विचार उभरेंगे जिनकी सामाजिक और व्यवसाय के क्षेत्र में सराहना होगी और वे जीवन की उन्नति और अच्छे कार्य के लिए प्रेरित करेंगे।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन पूर्ण अनुकूल तथा सौहार्दपूर्ण रहेगा क्योंकि आपकी जन्मकुण्डली में चन्द्र की आपके पिता के भाव अर्थात् नवम भाव पर दृष्टि है। पिता के साथ संबंधों में सुधार होगा और दैनिक और व्यावसायिक कार्यों में आपकी बहुत मदद करेंगे। आपको माता से कुछ प्राप्त होने के संकेत हैं। आपके भाई-बहनों के साथ आपके संबंध सौहार्दपूर्ण रहेंगे। आपके बच्चे आपके आज्ञाकारी होंगे और कुल मिलाकर पारिवारिक वातावरण तथा जीवन संतोषजनक रहेंगे।

शिक्षा पशिक्षण :

जीवन में नये विषयों के अध्ययन के लिए यह अवधि उत्तम सिद्ध होगी अध्ययन जारी रखने में आपकी रुचि होगी और आप अपना लक्ष्य प्राप्त करने में सफल होंगे ।



**अंतर्दशा :- चन्द्र - शनि
(01/01/2026 - 15/02/2027)**

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इस महादशा में शनि की अंतर्दशा 1 वर्ष 7 मास रहेगी। आपके लिए चंद्र महादशा 01/01/2026 को प्रारंभ हुई और 17/04/2031 को समाप्त होगी। शनि अंतर्दशा 01/01/2026 को प्रारंभ होकर 15/02/2027 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्रिका के प्रथम भाव में स्थित है। प्रथम भाव शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रूपरेखा आदि का परिचायक है। लग्न में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 3,7,10 भावों पर अपनी दृष्टि डाल रहा है।

इस अवधि में आप अधार्मिक और परंपराविरुद्ध हो सकते हैं। स्वास्थ्य कमजोर हो सकता है। वातरोगों से बचाव करें। अधिकारी वर्ग अप्रसन्न हो सकता है। सत्ताच्युत हो सकते हैं।

हर कदम पर सावधानी की आवश्यकता है। अरिष्ट से बचाव के लिए सोने या चांदी में जड़ा हुआ नीली रत्न दाहिनी हाथ की मध्यमा उंगली में, शनिवार के दिन रात्रि भोजन के बाद, पूजा करने के बाद धारण करें। काले घोड़े की नाल का छल्ला भी दाहिने हाथ की मध्यमा उंगली में शनिवार की रात्रि में धारण करें।

**अंतर्दशा :- चन्द्र - बुध
(15/02/2027 - 17/07/2028)**

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इस महादशा में बुध की अंतर्दशा 1 वर्ष 5 मास रहेगी।

आपके लिए चंद्र महादशा 01/01/2026 को प्रारंभ हुई थी और 17/04/2031 को समाप्त होगी। इसमें बुध की अंतर्दशा 15/02/2027 को प्रारंभ होकर 17/07/2028 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्रिका के दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान और जांचों का परिचायक है। दशम भाव में स्थित होकर बुध कुंडली के चतुर्थ भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व पर प्रभावी हो रहा है। इस अंतर्दशा की अवधि में आप शिक्षा-दीक्षा में उत्तम प्रगति करेंगे। आपको प्रसिद्धि और प्रसन्नता प्राप्त होंगी। दान-धर्म में रुचि होगी। व्यापार में उन्नति होगी। अध्यात्म में दिलचस्पी बढ़ेगी। हर कार्य में सफलता मिलेगी। नेत्रों के रोगों से बचाव करें।

शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध के वैदिक मंत्र के 9000 जाप करें।

अंतर्दशा :- चन्द्र - केतु
(17/07/2028 - 15/02/2029)

चंद्रमा की महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इसके अंतर्गत केतु अंतर्दशा 7 मास की रहेगी। आपके लिए चंद्र महादशा 01/01/2026 को प्रारंभ हुई ओर 17/04/2031 को समाप्त होगी। केतु अंतर्दशा 17/07/2028 को प्रारंभ होकर 15/02/2029 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका के छठे भाव में स्थित है। छठे भाव बीमारी, सुश्रुषा, मातहत या सेवक, कर्ज, शत्रु, कंजूसी और अतिकष्ट का द्योतक है। छठे भाव में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के द्वादश भाव पर दृष्टि डाल रहा है।

इस अंतर्दशा की अवधि में आपको प्रसिद्धि मिलेगी। आप उच्चपद प्राप्त कर सकते हैं। आपका कोई शत्रु नहीं होगा जिससे आप निडर होकर जीवनयापन करेंगे। आपको छठी इंद्रि की शक्ति और अंतर्ज्ञान प्राप्त हो सकते हैं मगर आपको चरित्र सुदृढ़ रखना चाहिए। कुल मिलाकर समय शुभ रहेगा।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए केतु के वैदिक मंत्र के 18,000 जाप करें।

अंतर्दशा :- चन्द्र - शुक्र
(15/02/2029 - 17/10/2030)

चंद्र की महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 01/01/2026 को प्रारंभ होकर 17/04/2031 को समाप्त होगी।

इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 1 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 15/02/2029 को प्रारंभ होकर 17/10/2030 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्रिका के दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान और जांघों का परिचायक है।

इस अवधि में आप प्रसिद्धि, धन और समाज में सम्मान प्राप्त करेंगे। विपरीत लिंग के व्यक्तियों पर आपका प्रभाव रहेगा। स्त्रियों से संबंधित उत्पाद में लाभ होगा। व्यापार में आप प्रवीण होंगे। उपचार करने की शक्ति भी प्राप्त कर सकते हैं। शिक्षा में व्यवधान आ सकता है। धर्मगुरुओं और संतों का सम्मान करेंगे।

शुभत्व में वृद्धि के लिए शुक्र के तांत्रिक मंत्र के 64000 जाप करें।

**अंतर्दशा :- चन्द्र - सूर्य
(17/10/2030 - 17/04/2031)**

चंद्रमा की महादशा की अवधि 10 वर्ष होगी। आपके लिए यह 01/01/2026 को प्रारंभ होगी और 17/04/2031 को समाप्त होगी।

इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 6 मास होगी जो आपके लिए 17/10/2030 से प्रारंभ होकर 17/04/2031 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्रिका में दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान, जांघों का परिचायक है। सूर्य एक शक्तिशाली ग्रह है और पिता व आत्मा का कारक है।

इस अवधि में आप सभी कार्यों में सफल रहेंगे। धन और विद्या का आगमन और संचय होगा। आप बली और प्रसन्न होंगे। वाहन सुख रहेगा, बुद्धि बलवती होगी, उच्चपद की प्राप्ति होगी। पुरखों की जायदाद भी मिल सकती है। आपका व्यक्तित्व आकर्षक होगा, संगीत में रुचि होगी और लोकप्रियता बढ़ेगी।

सूर्य के शुभत्व में वृद्धि के लिए सूर्य के वैदिक मंत्र का जाप प्रातःकाल, अगर संभव हो तो सूर्यादय काल में करें।